# जी-5 प्रमुखों के पत्रकार सम्मेलन के अवसर पर प्रधानमंत्री का उद्घाटन भाषण

## 8 जुलाई, 2009

महामहिम राष्ट्रपति काल्डिरान, ब्राजील के राष्ट्रपति लूला, दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति जैकब जूमा और माननीय मंत्री डाईबिंगुओं, पत्रकार भाइयों एवं बहनों,

मुझे इटली के इस सुंदर नगर ल-अकिला में आकर अति प्रसन्नता हुई है जो इस क्षेत्र में अप्रैल में आए विध्वंसकारी भूकंप से हुई क्षति से असाधारण रूप से उबर गया है।

आज अपनी बैठक में हमने एक बृहत एजेंडा को सम्मिलित किया है और मैं राष्ट्रपति कॉल्डिरान के विचार-विमर्श को लाभप्रद और फलप्रद बनाने में उनके प्रयास के लिए शुक्रिया अदा करता हूं।

विकासशील देश वैश्विक वित्तीय और आर्थिक मंदी से सर्वाधिक प्रभावित हुए हैं। हमने इस बात पर विचार-विमर्श किया है कि हम पूर्ति के नए-नए प्रयासों को मजबूत बनाने के लिए किस प्रकार सहयोग दे सकते हैं। यह केवल व्यापक दृष्टिकोण के कारण है कि एक सामूहिक वैश्विक प्रयास वास्तव में प्रभावी हो सकता है।

हम कल विकासशील देशों को वित्तीय मदद देते रहने और संरक्षणवादियों के दबाव का प्रतिरोध करके बाजार को खुला रखने के महत्व पर भी बल देंगे।

विकासशील देश खाद्यान्न की ऊंची कीमतों से भी बहुत बुरी तरह से प्रभावित हैं। हम इस बात से सहमत हैं कि कृषि एवं खाद्यान्न सुरक्षा को छोटे और सीमांत किसानों की चिंताओं पर विशेष ध्यान देते हुए अंतरराष्ट्रीय एजेंडा के केंद्र बिंदु में रखे जाने की आवश्यकता है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय के जिम्मेदार सदस्यों के रूप में हम अपने पर्यावरण को संरक्षित और सुरक्षित रखना अपना दायित्व समझते हैं। परंतु विकासशील देशों की निर्धनता के चलते जलवायु परिवर्तन पर ध्यान नहीं दिया जा सकता है।

सतत विकास की संकल्पना अभी तक दूर की कौड़ी सिद्ध हुई है। हमें विकास की एक सुसंगत कार्यनीति विकसित करने की आवश्यकता है जिसमें पर्यावरण को क्षति पहुंचाए बिना उच्च जीवन स्तर की संकल्पना को साकार किया जा सके।

प्रौद्योगिकी जलवायु परिवर्तन की चुनौती का सामना करने के लिए हमारी वैश्विक कार्यनीति में प्रमुख तत्व होगी। भारत संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक कार्य

विभाग के सहयोग से नई दिल्ली में 22 अक्तूबर को जलवायु परिवर्तन से संबद्ध प्रौद्योगिकी विकास और अंतरण पर एक सम्मेलन की मेजबानी करेगा। इसका उद्देश्य द्रुत और विश्वव्यापी रीति से जलवायु अनुकूल प्रौद्योगिकियों के सहयोगात्मक विकास, परिनियोजन, प्रचार-प्रसार को बढ़ाना है।

जी-5 घोषणा में विकासशील देशों की चिंताओं और स्थितियों पर विचार किया गया है और राष्ट्रपति काल्डिरान द्वारा उनका सार बहुत ही प्रशंसनीय ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इन पर वैश्विक चुनौतियों की वैश्विक प्रतिक्रिया की योजना बनाते समय ध्यान दिए जाने की आवश्यकता होगी। हम अपने विकसित देशों के भागीदारों के साथ भी समान आधार पर वार्तालाप करना चाहेंगे।

भारत जी-5 के साथ कार्य करने की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा है क्योंकि कल हम जी-8 देशों के साथ अपनी बातचीत प्रारंभ करेंगे।

अंत में, मैं अपने मेजबान प्रधानमंत्री बेरलुस्कानी और इटली वासियों का उनके हार्दिक स्वागत और सत्कार के लिए आभार व्यक्त करना चाहूंगा।

********